रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

www.svmmcollege.in

Unit Wise

Notes

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ (अजमेर) राज.

र. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित पन सोशियल वेलफेयर एण्ड एजुकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

E-mail : info.bidevanda@yahoo.com

मध्यकालीन भारत

इस्लाम धर्म का उदय

इस्लाम → तात्पर्य - विनम्रता / पवित्रता / शक्ति मे प्रवेश करना
↳ अनुयायी ÷ मुसलमान
↓
मुसल्लम + ईमान
अर्थात - जिसका ईमान पुख्ता हो

प्रवर्तक ÷ मुहम्मद साहब
↓

पिता	माता	दादा	पत्नी
अब्दुल्ला	आमीना	अलमुतल्लिब	खादीजा

पुत्री
फातिमा wed's अली

मुहम्मद साहब → जन्म 570 AD मक्का
610 AD खुदा का संदेश (हीरा पहाड़ी)
622 AD हिजरी संवत शुरू (मक्का - मदीना)
632 AD मुहम्मद साहब मृत्यु

7 वी सदी मे इस्लाम धर्म का उदय.
विस्तार - उतरी अफ्रीका से अरब प्रायद्वीप
ईरान से भारत
इस्लाम - एकेश्वरवादी (अल्लाह)

मुहम्मद साहब की मृत्यु के बाद मुस्लिम धर्म का नेतृत्व प्रदान करने की जिम्मेदारी मुहम्मद साहब के नजदीकी बंदो को दी गई

यही खलीफा कहलाये थे।
जैसे - अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली

** शिया और सुन्नी मे भेद **
कारण - खलीफा पद

शिया	सुन्नी
खलीफा पैगम्बर का रिश्तेदार ही बन सकता है।	कोई भी खलीफा बन सकता है जो मुहम्मद साहब के विचारो पर चलता हो।
अली	अबूबक्र, उमर

→ इनकी हत्या हुई इनके बाद मुहम्मद वैयाद ने दमिश्क मे उमैयद खलीफा की स्थापना की

उमैयद खलीफा को अब्बू खलीफाओ ने हटाया

** भारत मे अरब आक्रमण **

अरब —अर्थ→ ललित कुपन

अरब - भारत संबंध →

→ भारत से चंदन, कपूर, लौंग, कालीमिर्च, हीरा आदि ले जाते थे तथा मिस्त्र, यूरोप अफ्रीका मे बेच देते थे

→ भारत मे शराब, तलवार, घोडे, रेशमी कपडे आदि लाते थे व यहा बेचते थे।

अरबो की शुरुआती विजय → सिंध, मुल्तान

* भारत मे अरबो के आक्रमण का कारण →

Reason :- • राजाओ द्वारा साम्राज्य विस्तार
• खलीफा द्वारा मुस्लिम धर्म का प्रचार प्रसार

| मुहम्मद-बिन-कासिम | - भारत पर आक्रमण 712 ई.

MBK से पहले आक्रमण → 662 - अलहैरिस
664 - अल मुहल्लत

भारत पर MBK के आक्रमण का कारण →

MBK का चाचा अल हज्जाज था इसके लिए श्रीलंका के राजा ने 8 जहाज हीरे जवाराहतो से भरे थे उनको खलीफा व अल हज्जाज हेतु भेजा

→ दाहिर नामक राजा के क्षेत्र मे उन नावो को लूट लिया गया जब अल हज्जाज ने दाहिर से उनकी मांग की तो दाहिर ने मना कर दिया

दाहिर के मना करने पर अल हज्जाज ने दाहिर पर 2 बार हमला करवाया तथा बाद मे MBK को भेजा।

712 मे MBK ने सिंध पर हमला किया

↳ इससे पहले 711 मे देवल पर हमला किया MBK ने वहा पर दाहिर का भतीजा था वह हार गया

↳ नेऊन पर MBK ने हमला किया वहा पर जय सिंह शासक था (पुत्र दाहिर का) जो भी हारा नेऊन मे बौद्ध लोग रहते थे

↳ सेहवान पर MBK ने हमला किया तो वहाँ का शासक माजरा था जो वहा से भाग कर शीशम आ गया जहा पर जाटो ने उनकी हत्या कर दी।

↳ शीशम के जाट भी हार गये।

राजौर / ब्राह्मणाबाद का युद्ध

दाहिर v/s MBK → जीत गया
दाहिर को मार दिया गया।

+
जयसिंह
नेऊन से हार कर राजौर आ गया तथा राजौर का किला अपनी मां को देकर ब्राह्मणाबाद आ गया।

Page No.
Date:

↳ जब राजौर MBK राजौर की तरफ बढ़ा तो दाहिर की पत्नी ने जौहर कर लिया

↳ दाहिर की अन्य पत्नी लाडी थी जिसकी 2 पुत्रिया थी सूर्यदेवी व परमलदेवी। यह ब्राह्मणबाद मे थी जहा जयसिंह भी था तो जयसिंह MBK से लड़ा परंतु वहा के कुछ लोगो ने जयसिंह से धोखा किया तथा वह इस्लाम धर्म को स्वीकारता है।

↳ आलोर विजय - इन्होने पहले लड़ाई की परंतु बाद मे आत्मसमर्पण किया

* जहा-2 MBK जीता वहा इस्लाम स्वीकार करवाता गया।

* जजिया कर लगाया गया।
* भारतीयो को कहा गया कि वे मुसलमान आगन्तुको का आतिथ्य करे।

MBK को गर्जुर, राष्ट्रकूटो व चालुक्यो ने आगे नहीं बढ़ पाया।
अरबो ने चिकित्सा, रसायन, गणित, ज्योतिष कला आदि का अनुवाद करवाया।

ब्रह्मगुप्त अरब मे प्रसिद्ध था।

अलहज्जाज व अलवलीद की मृत्यु के बाद सुलेमान खलीफा बना।

Scanned with OKEN Scanner

** भारत मे तुर्कों का आक्रमण **

अलप्तगीन ÷ 10 वी सदी मे गजनी मे तुर्क साम्राज्य की स्थापना।

↓ पुत्र

सुबुक्तगीन ÷ तुर्कों का भारत मे पहला आक्रमण इसी के नेतृत्व मे तथा अफगानिस्तान राजा जयपाल से संधि की

Capital – वैहिन्द / उदभांडपुर / पेशावर / पाकिस्तान

↓ पुत्र

महमूद गजनवी ÷ यह यामिनी वंश का था भारत पर 17 बार आक्रमण

1st सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला शासक

गजनवी के भारत पर आक्रमण →

(1) जयपाल → पंजाब + अफगान क्षेत्र राजा
गजनवी का हमला – 1000 ई.
↳ हारकर आत्महत्या कर ली
महमूद इतिहासकारो ने इसे (जयपाल) को "ईश्वर का शत्रु" कहा

(2) अब्दुल फतेह दाऊद – 1005 ई. मुल्तान

(3) आंनदपाल – 1008 ई.
↳ जयपाल का पुत्र
कन्नौज, ग्वालियर, अजमेर, उज्जैन की संयुक्त सेना के साथ, परंतु हारा।

(4) राज्यपाल – 1018-19 – कन्नौज
बिना युद्ध किये भाग गया तो विद्याधर ने मार दिया।

⑤ विद्याधर - 1021-22
↳ गजनवी संधि करता है।

⑥ सोमनाथ मे राजा मूलराज I
सेनापति - भीमदेव 1024-25

भगवान शिव के शिवलिंग को तोड देता है तथा ले जाकर गजनी मे जामी मस्जिद की सिढियो मे लगवा देता है।

गजनवी की उपाधियाँ
1. गाजी → विधर्मियो का कत्ल करने वाला
2. बुतशिकन → मूर्तिभंजक
3. सुल्तान → पहली बार

गजनवी के दरबारी विद्वान

1. उत्बी - गजनवी का शाही इतिहासकार
↳ किताब उल यामिनी
तारीख ए यामिनी

2. अलबरूनी - गणितज्ञ, दार्शनिक, ज्योतिष व संस्कृत का ज्ञाता
↳ किताब उल हिंद
तारीख उल हिंद
पुराणो का पहली बार अध्ययन

3. फिरदौसी - पूर्व का होमर
↳ शाहनामा (अफगानिस्तान की महाभारत)

Scanned with OKEN Scanner

4. बैहकी - पूर्वी पैप्स
↳ तारीख - ए - सुबुक्तगीन

गजनवी के सिक्के - चांदी के अरबी व संस्कृत भाषा में लिखित/मुद्रित सिक्के।
वजन - 3.0 ग्राम

गजनवी की मृत्यु - 1030 में

** मुहम्मद गौरी **

गयासुद्दीन मुहम्मद बिन साम - 1163 ई.

गौर नामक स्वतंत्र रियासत की स्थापना

भाई ↓

शिहाबुद्दीन मुहम्मद बिन साम

1173 में गयासुद्दीन ने गिज़ से तुर्कों को भगाकर वहाँ का शासक गौरी / SM बिन साम को बना दिया।

अन्य नाम < मुहम्मद गौरी / मुइज़ुद्दीन

गौरी का भारत मे आक्रमण →

1175 मे मुल्तान विजय

1176 मे सिंध की उच्च विजय

1178 मे गुजरात पर हमला

↳ शासक - मूलराज II

सेनापति - भीमदेव II

आबू पर्वत के पास भीम II v/s गौरी

तथा गौरी हार गया था

1179 मे पेशावर जीता

1181 मे लाहौर जीता

1189 मे भटिण्डा जीता

1191 मे तराईन I युद्ध - गौरी हारा

1192 मे तराईन II युद्ध - पृथ्वीराज हारा

1194 मे चंदावर का युद्ध →
गौरी v/s जयचंद
↓
जीत गया

मोहम्मद गौरी

- तुर्की साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक
- सिक्के चलाए एक तरफ देवी लक्ष्मी का अंकन दूसरी तरफ फारसी मे कलमा
- गुलाम
  - कुतुबुद्दीन ऐबक
    ↓
    गौरी द्वारा जीते गए क्षेत्रो का प्रतिनिधि नियुक्त
  - बख्तियार खिलजी
    ↓
    - बंगाल व बिहार मे गौरी का प्रतिनिधि
    - नालंदा व विक्रमशील मे आग लगाई
    - बंगाल का शासक लक्ष्मण सेन इसके डर से भाग गया
      → जयदेव इसका दरबारी लेखक था

- गौरी खोखरो को दबाने पुनः आता है।
- गौरी की 1206 मे खोखरो द्वारा दमयक स्थान पर।

दिल्ली सल्तनत
1206 - 1526

दिल्ली सल्तनत मे वंश
1. गुलाम वंश (1206 - 90)
2. खिलजी वंश (1290 - 1320)
3. तुगलक वंश (1320 - 1414)
4. सैयद वंश (1414 - 1451)
5. लोदी वंश (1451 - 1526)

① गुलाम वंश
↓
संस्थापक - कुतुबुद्दीन ऐबक → 1206-10

राजधानी लाहौर

↳ अन्य नाम - • हातिमताई
• लाखबख्श
• कुरान खाँ

कुतुबी जनजाति का तुर्क

→ फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी का दास
→ बाद मे गौरी ने खरीद लिया
→ गौरी ने अमीर - ए - आखुर बनाया
→ ऐबक ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की

→ दासता से मुक्ति - गयासुद्दीन महमूद 1208
↓
गौरी का भाई

↳ विद्वान :- 1) हसन निजामी → ताज - उल मासिर
2) फक्र - ए - मुदब्बिर → तारिख - ए - मुबारिकशाही

स्थापत्य मे योगदान →

1. कुवतुल - उल - इस्लाम मस्जिद → दिल्ली
   ↳ तुर्कों द्वारा बनवाई गई पहली मस्जिद
   27 जैन व विष्णु मंदिर तुडवाकर

2. कुतुबमीनार → दिल्ली
   ↳ कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी संत की याद
   I^{st} मंजिल - कुतुबुद्दीन ऐबक
   II^{nd} - IV^{th} मंजिल - इल्तुतमिश
   V^{th} - FST

3. अढ़ाई दिन का झोपड़ा → अजमेर

⇒ गौरी के अन्य गुलामो से ऐबक को खतरा व उनसे छुटकारा →

1) ताजुद्दीन एल्दौज ÷ यह दिल्ली मे रहता था। गौरी की मृत्यु के बाद यह भी साम्राज्य मे हक की मांग करता है। अतः ऐबक लाहौर से दिल्ली आता ही नहीं है।

2) नासिरुद्दीन कुबाचा ÷ ऐबक ने अपनी बहन की शादी इससे करवा कर अपनी ओर मिला लिया।

Scanned with OKEN Scanner

मृत्यु - ऐबक की लाहौर मे 1206 चौगान (पोलो) खेलते हुए

आरामशाह :- ऐबक का पुत्र
1210 मे गद्दी पर बैठा
अयोग्य होने के कारण हटा दिया गया।

इल्तुतमिश :- 1210 - 1236
→ आरामशाह को हराकर गद्दी पर बैठा
ऐबक का दामाद था, ऐबक का गुलाम भी

यह इल्बारी तुर्क था, गौरी ने इसकी ग्वालियर विजय पर ग्वालियर की इक्ता दी। इसके बाद मे बुलंदशहर तथा बंदायू का भी इक्तेदार बन

इल्तुतमिश की समस्याएँ →

(1) यल्दौज - मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद पहले तो यह दिल्ली मे रहता है परंतु बाद मे यह गजनी को जीतने जाता है जहा पर ख्वारिजम के शाह से हार कर लाहौर भाग आता है। इसी बीच (1215 ई.) IM तराईन के IIIrd युद्ध मे इसे हराकर बंदी बना लेता है। यल्दौज नामक समस्या से IM ऐसे छुटकारा पाता है।

Page No.
Date:

(2) कुबाचा :- यह मुलतान + सिंध प्रांत मे रहता था जहा पर इल्तुतमिश ने 2 सेना भेजकर अधिकार कर लिया तथा कुबाचा ने आत्म हत्या कर ली।

(3) मंगोल समस्या :-

चंगेज खॉ ने ख्वारिजम पर अधिकार कर लिया तो ख्वारिजम के शाह का पुत्र जलालुद्दीन मांगबर्नी भागकर भारत की ओर आया तथा Im से सहायता मांगी परंतु Im ने दूरदर्शिता को समझकर उसकी कोई सहायता नही कि तथा मंगोलो का भारत से हमला टल गया

1205-06 मे खोखरो के विद्रोहो को दबाने मे Im ने गौरी व ऐबक की सहायता की थी इसलिए गौरी ने ऐबक को कहकर Im की दासता की ~~[illegible]~~ मुक्ती दिलाई।

** इल्तुतमिश - दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक

सिक्के - 1) चांदी का टंका - 175 ग्रेन
2) तांबे का जितल -

नाम लिखने परंपरा चलाई
टकसाल का नाम भी सिक्को पर लिखा जाता था।

बगदाद के खलीफा - अल मुस्तसीर बिल्लाह
↓
इल्तुतमिश को सुल्तान की उपाधि

तुर्कान - ए - चहलगानी → प्रशासन चलाने हेतु
40 गुलाम संगठन

स्थापत्य में योगदान →

1) कुतुबमीनार को पूरा करवाया
2) तारकीन का दरवाजा - नागौर मे हमीदुद्दीन नागौरी की दरगाह का दरवाजा है।

3) सुल्तान गढ़ी का मकबरा - दिल्ली
↳ अपने पुत्र नासिरुद्दीन महमूद (1229 मे मृत्यु) की याद में।

4) हौज - ए - शम्सी - बदायू (U.P.)

5) इल्तुतमिश का मकबरा - दिल्ली
↳ स्क्वीच शैली का पहला मकबरा

मृत्यु - 1236 बामियान आक्रमण जाते समय
30 / 04 / 1236 को मृत्यु

Scanned with OKEN Scanner

Page No.
Date:

रुकनुद्दीन फिरोज - 1236

यह अयोग्य शासक था। जब यह शासक बना तो कई विद्रोह हुए जब यह उनको दबाने दिल्ली से बाहर जाता है तो इस स्थिति का फायदा रजिया उठाती है वह जनता के सामने लाल वस्त्र पहनकर जाती तथा कहती है कि "मेरे पिता द्वारा मुझे शासक घोषित किया गया है तो रुकनुद्दीन शासक नहीं बनना चाहिए।" जनता उसका समर्थन करती है।

रजिया सुल्तान → 1236 - 40

शासक बनते ही रजिया को विद्रोह का सामना करना पड़ा। इल्तुतमिश का वजीर निजामुद्दीन जुनैदी सबसे पहले विद्रोह करता है जिसको रजिया दबा देती है।

अल्तुनिया और रजिया →

↳ यह भटिण्डा का गवर्नर था।
यह तुर्क नेता था।

रजिया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया ताकि उसकी स्थिति मजबूत रहे।

अल्तुनिया + रजिया ने बहरामशाह को हराना चाहा परंतु दोनों हार गये तथा कैथल स्थान पर मार दिये गये।

मुईजुद्दीन बहरामशाह → 1240-42

ऐतगीन को नायब - ए - मामलिकात पद पर नियुक्त किया। परंतु तंग आकर उसका वध करवा दिया। जिससे तुर्क इससे नाराज हो गये तथा इसका वध कर दिया।

अलाउद्दीन मसूदशाह → 1242-46

बलबन इसके समय "आमिर - ए - हाजिब" बनता है

नासिरुद्दीन महमूद → 1246-65

बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह इससे कर दिया
नासिरुद्दीन महमूद ने बलबन को "उलूग खाँ" की उपाधि दी

गयासुद्दीन बलबन → 1265-87 → इल्बरी तुर्क था
बलबनी वंश की स्थापना

मूल नाम :- बहाउद्दीन

मंगोलो ने इसे पकड़ लिया तथा जमालुद्दीन को बेच दिया तथा जमालुद्दीन ने इल्तुतमिश को बेच दिया।

रजिया के विरुद्ध तुर्कों का साथ दिया था।

Scanned with OKEN Scanner

* बलबन के पद व समकालिन शासक
  रजिया → अमीर-ए-शिकार
  बहरामशाह → अमीर-ए-आखुर
  मसूदशाह → अमीर-ए-हाजिब
  नासिरुद्दीन → नाएब-ए-मामलिकात
  इल्तुतमिश → खसदार

* बलबन की नीति → लोह व रक्त की नीति

* राजत्व का सिद्धांत →
  सुल्तान का पद ईश्वर द्वारा प्रदत
  सुल्तान का निरंकुश होना आवश्यक

→ बलबन ने नियाबत-ए-खुदाई (पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि) तथा जिल्ल-ए-अल्लाही (ईश्वर का प्रतिबिम्ब) की उपाधि धारण की

→ बलबन ने सिजदा (सिर झुकाकर बैठना) तथा पैबोस (पावो को चूमना) प्रथाए शुरु की

→ बलबन ने "तुर्कानि-ए-चहलगानी" को खत्म कर दिया।

→ बलबन ने "बारिद-ए-मुमालिक"– गुप्तचर विभाग शुरु किया

→ बलबन के 2 पुत्र → बुगरा खाँ व मुहम्मद खाँ

बुगरा खाँ → बंगाल चला गया तथा वापस नही आया

मुहम्मद खाँ → मंगोलो से संघर्ष करता हुआ मारा गया

अमीर खुसरो
अमीर हसन > मुहम्मद खॉ के शरण मे थे तथा मृत्यु के बाद बलबन के शरण मे आ गये

बलबन की मृत्यु - 1287 मे हुई।

बलबन के बाद शासक - कैकुबाद
कैखुसरो
क्युमर्स
↓
जलालुद्दीन ने मार कर शासक बना

Scanned with OKEN Scanner

** खिलजी वंश **

1. जलालुद्दीन खिलजी → 1290 - 1296
2. अलाउद्दीन खिलजी → 1296 - 1316
3. मुबारकशाह खिलजी → 1316 - 1320

जलालुद्दीन खिलजी → 70 वर्ष का बूढा शासक था

- खिलजी वंश का संस्थापक था।
- दक्षिण भारत का पहला अभियान इसी काल मे।
- दीवान - ए - वक्फ पद बनाया
- राज्याभिषेक : कूनागढ़ी महल / लाल महल
- राजधानी : कोलापरी

- दक्षिण भारत का अभियान →
  अलाउद्दीन ने देवगिरी के राजा रामचंद्र देव पर हमला किया वहा से खजाना लूटकर वह कड़ा नामक स्थान पर ले जाता है तथा जलालुद्दीन को वही पर बुलाता है।
  मुहम्मद सलीम + बख्तियार खिलजी की सहायता से जलालुद्दीन को मरवा देता है।

अलाउद्दीन खिलजी → 1296 - 1316

- यह जलालुद्दीन का भतीजा व दामाद था।
- शासक बनते समय कड़ा व माणिकपुर का सूबेदार था।
- शासक बनते समय इसे अर्कली खाँ व इब्राहिम खाँ, जलालुद्दीन के पुत्र थे उनको मरवा दिया

कोतवाल → अलाउल मुल्क

मूल नाम अलीगुर्शप

सेनापति → जफर खाँ ← (अलाउद्दीन खिलजी) → उपाधि → ⓐ सिकंदर ए सानी

भारत का सिकंदर

ⓑ नासिर - उल - मोमनीन (खलीफा का सहायक)

ⓒ यामिन - उल - खिलाफत (खलीफा का दाहिना हाथ)

* इसने सिकंदर की तरह विश्व विजेता का ख्वाब देखा परंतु अलाउल मुल्क की समझाइस पर त्याग दिया।

<u>A.K. के अभियान</u> →

1. देवगिरी → राजा रामचंद्र देव [1296]

2. गुजरात → राजा कर्णबाघेला [1298]
A.K. हमला करता है तो कर्णबाघेला व (देवल देवी) उसकी पुत्री भाग जाते हैं। परंतु कर्णबाघेला की पत्नी कमलादेवी A.K. के हाथ लग जाती है तथा वह उससे विवाह कर लेता है।

3. देवगिरी → 1305-06
↓
मलिक काफ़ूर जाता है, रामचंद्र देव शासक रहता है। RCD ने 1305-06 में कर दिल्ली नहीं पहुंचाता है।

मलिक काफ़ूर देवगिरी जाकर रामचंद्र देव को बंदी बनाकर दिल्ली पेश करता है।

A.K., रामचंद्र देव को रायरायन की उपाधि 1 लाख सोने का टंका, नौसरी का किला देकर, कर पहुँचाने की शर्त पर छोड़ देता है

4. वारंगल → शासक - प्रताप रुद्र देव
↓
काकतीय वंश

काफ़ूर को गोलकुंडा की खान से निकला कोहिनूर हीरा PRD भेंट कर देता है

<u>AK के प्रशासनिक कार्य</u> :-

* विद्रोह होने के कारणों का पता व समाधान खोज

Reason -
- जनता की जानकारी न होना
- मद्यपान का प्रयोग
- अमीर व मालिकों के घनिष्ठ संबंध
- अमीरों व मालिकों के पास धन एकत्र

Solve -
- जनता की जानकारी हेतु गुप्तचर नियुक्त
- मद्यपान निषेध कर दिया
- अमीर व मालिकों के मिलने पर रोक
- अमीर व मालिकों के वैवाहिक संबंधों पर भी रोक

- सभी से ~~अक~~ राजकीय अनुदान, पुरस्कार, इनाम, वक्फ भूमियों पर रोक तथा छीनकर उनको खालसा भूमि मे बदला।

* भू राजस्व क्षेत्र –

दीवान-ए-मुस्तखराज विभाग द्वारा भूमि की पैमाइश करवाई।
राजस्व की दर 50% निर्धारित की
A.K. प्रथम मुस्लिम शासक जिसने भूमि की वास्तविक आय पर कर निर्धारित
A.K. ने बिस्वा नामक निर्धारिक चलाया
A.K. ने नये कर लगाये –

1) चरी कर → मकान पर
2) चराई कर → दुधारु पशुओ पर

* बाजार क्षेत्र –

बाजार क्षेत्र मे सुधार का मुख्य कारण A.K. की सेना को नकद वेतन था।

A.K. के समय के 4 बाजार –

1) मंडी / गल्ला बाजार
2) सराए अदल – कपड़ा, चीनी, मेवा, घी
3) घोड़ो व दासो का बाजार
4) शेष वस्तुओ का बाजार

बाजार अधीक्षक नियुक्त किया – मलिक काफूर

बरनी लिखता है कि "इतनी बड़ी सेना को साधारण वेतन भी दिया जाए तो 4-5 वर्षों मे राज्य का खजाना खत्म हो जाता" अतः बाजार नियंत्रण अच्छा उपाय था।

Scanned with OKEN Scanner

* **अन्य कार्य** –
: घोड़े दागने की प्रथा शुरू की
: हुलिया प्रथा शुरू कि जिसमे सैनिको के बारे मे जानकारी लिखी जाती थी।

→ अमीर खुसरो व हसन निजामी जैसे दरबारी कवि थे
↓
• सितार का अविष्कार किया।
• वीणा को संशोधीत किया।
• इनको तोता-ए-हिन्द भी कहते हैं।

बरनी लिखता है "ग.K. की लूट का 4/5 भाग राज्य के खजाने मे तथा 1/5 भाग सैनिको मे बाट देता था।"

साम्राज्य विस्तार → 4 के आगे के अभियान
1. रणथम्भौर ÷
शासक – हम्मीर देव
Reason – मंगोल नेता मुहम्मद शाह को शरण

इस अभियान मे नुसरत खॉं मारा जाता है
: तारीख-ए-अलाई
: हम्मीर महाकाव्य } वर्णन प्राप्ति

2. चितोड़गढ़ ÷
शासक – रतन सिंह
Reason – पदमावती की इच्छा

(1540) पदमावत ग्रंथ मे वर्णन – मलिक मो. जायसी

Scanned with OKEN Scanner

चितौड को जीतकर खिज्र खॉ को देता है
तथा नाम खिज्राबाद रख देता है।

3. होयसल पर आक्रमण → 1310-11
शासक - वीर बल्लाल III
राजधानी - द्वारसमुद्र
मलिक काफूर हमला करता है व जीतता है

4. मालाबार के पांड्य →
सुंदर पांड्य ⟩ गद्दी का विवाद
वीर पांड्य
काफूर से मिल जाता है तथा वीर पांड्य को ढूंढते हुए लिंग महादेव तथा रामेश्वरम को लूटता है।

5. मंगोल के आक्रमण को विफल किया -
गयासुद्दीन तुगलक ने रोका

6. जैसलमेर → 1299
शासक - दूदा

<u>स्थापत्य में योगदान</u> →
1. अलाई दरवाजा - कुतुबमिनार के सामने
गुजरात विजय के उपलक्ष में

2. अलाई किला - दिल्ली
↳ कौसके सिटी भी कहते हैं

3. हजार खंभा महल

4. शिरी फोर्ट
5. जमातखाना मस्जिद

A.K. की मृत्यु 1316 मे जलोधर रोग से हुई।

A.K. के बाद सियाबुद्दीन उमर शासक बनता है जिसका संरक्षक मलिक काफूर बनता है तथा सियाबुद्दीन की हत्या कर शासक मुबारकशाह खिलजी बनता है।

मुबारकशाह खिलजी → 1316-20

- उपाधि - खलीफतुल्लाह (अल्लाह का प्रतिनिधि)
- हत्या - नासिरुद्दीन खुसरो द्वारा
  ↓
  इसे हटाकर शासक गयासुद्दीन तुगलक बनता है।

Scanned with OKEN Scanner

** तुगलक वंश **

1. गयासुद्दीन तुगलक → 1320 - 1325
2. मुहम्मद बिन तुगलक → 1325 - 1351
3. फिरोजशाह तुगलक → 1351 - 1388

गयासुद्दीन तुगलक → 1320 - 1325

पिता → करौना तुर्क - बलबन के दास थे
माता → जाट महिला
उपाधि → मलिक-उल-गाजी / गाजी → अर्थ
↓
29 बार मंगोलो को खदेड़ा था
काफिरो का वध करने वाला
अन्य नाम → गाजी बेग तुगलक

<u>महत्वपूर्ण कार्य</u> :-

- तुगलकाबाद शहर का निर्माण
- A.K. द्वारा छिनी गई जागीरे जनता को दे दी
- किसानों के हित में कार्य किया।
- लगान 1/5 से 1/3 किया
- कर बढ़ोतरी 1/10 से 1/11 के बीच रखी।
- नहरो व कुँओ का निर्माण करवाया।
- डाक व यातायात प्रणाली की पूर्ण व्यवस्था।
  ↳ 3/4 मील पर डाक कर्मचारी नियुक्त
- तेलगांना का नाम सुल्तानपुर रखा।

Scanned with OKEN Scanner

बंगाल को गयासुद्दीन तुगलक ने अधीन किया
बंगाल से आते समय अफगानपुर में
लकड़ी का द्वार गिरने से 1325 में मृत्यु

मकबरा - तुगलकाबाद

निजामुद्दीन औलिया व गयासुद्दीन तुगलक के बीच मतभेद था। औलिया ने हीए तुगलक को कहा था "दिल्ली दूर है।"

मोहम्मद - बिन - तुगलक :- 1325 - 1351

- मूल नाम → जौना खाँ
- उपाधि → उलुग खाँ
- साम्राज्य में कुल प्रांत → 23
- जहापनाह नगर, आदिलाबाद का किला बनवाया
- होली व दशहरा जैसे हिन्दू त्यौहारो में भाग लेने वाला पहला शासक।
- विजयनगर व बहमनी राज्य का अस्तित्व
- दीवान ए कोही (कृषि विभाग) की स्थापना
  - ↳ कर - 1/2
- इब्नबतूता इसी समय भारत है।
  - ↳ मोरक्को निवासी
  - ↳ Book रहला
- दरबारी जैन विद्वान - राजशेखर
  जिन प्रभसूरी

MBT खगोलशास्त्र, गणित, आयुर्वेद का विद्वान था
MBT ने गैर तुर्की व भारतीयो को सरकारी पदो पर नियुक्त किया।

बरनी लिखता है "MBT को कहता है छिछोरा, माली, जुलाहा, नाई, रसोइया हो"

सर्वाधिक विद्रोह 34 इसके काल मे हुए।

| MBT की योजनाएँ | - असफल

(A) खुरासान व इराक विजय योजना →
MBT ने 3 लाख 7 हजार सैनिको को तैयार करता है तथा 1 वर्ष का वेतन भी दे देता है।

(B) राजधानी दिल्ली से दौलताबाद ले गया → 1327
Reason - उतर व दक्षिण मे हो रहे विद्रोह को दबाने हेतु।

(C) चाँदी के सिक्को की जगह तांबे के चलाए
Reason - सोना व चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओ को नष्ट होने से बचाया जा सके।
परंतु इस योजना से बाजार मे नकली कांसे के सिक्को की भरमार हो गयी तो इसने कांसे के सिक्को को सरकारी खजाने से चांदी के सिक्को से बदल दिया।

इससे खजाना खाली हो गया।
इब्नबतूता ने MBT के सोने के सिक्के को 'दीनार' की संज्ञा दी।

इब्नबतूता - यह MBT के काल मे भारत आया था। MBT ने इसे दिल्ली मे काजी नियुक्त किया। 1342 मे इसको राजदूत बनाकर चीन भेजा।

MBT द्वारा दोआब मे कर वृद्धि → 1325-27
→ जब कर मे वृद्धि की तो वहा पर अकाल पड़ गया परंतु कर वसूली चालू रही जब किसानो ने इसका विरोध किया तो कम दाम पर ऋण (सोनधर) उपलब्ध कराया

③ खुरासान योजना →
कुमायूँ के पहाड़ी प्रदेशो मे आरंभ कि गई। इसका उद्देश्य चीनियो की बढ़त को रोकना था।
दिल्ली की सेना विषम प्रदेशो मे फँस गई

MBT ने दीवान-ए-कोही (कृषि विभाग) की स्थापना की। इसका काम कृषको को प्रत्यक्ष सहायता देकर अधिक भूमि कृषि कार्य के अधीन लाना था। 60 वर्ग मील का टुकड़ा एक भूमि को चुना गया तथा फसल चक्र के अनुसार फसल की गई।

Scanned with OKEN Scanner

गुजरात का विद्रोह :-

इसे दबाने हेतु तागी के नेतृत्व मे MBT ने सेना भेजी परंतु तागी पराजित होकर सिंध की तरफ भाग गया कि MBT गुजरात गया वहा विद्रोह को दबाकर वह सिंध की ओर बढ़ा तागी विद्रोह ना करे। रास्ते मे थट्टा के निकट 20/03/1351 मे MBT की मृत्यु हो गयी।

बदायुनी ने कहा "आज सुल्तान को प्रजा से प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई"

(F) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन → 1329-30

विश्वभर मे चांदी की कमी आ गई थी तथा चीन का कुबलई खाँ, ईरान का गजन खाँ तथा मंगोल सांकेतिक मुद्रा का सफल प्रयोग कर चुके थे। तो MBT ने चांदी की जगह कांसे का सिक्का चलाया, परंतु लोगो ने स्व ही जाली मुद्रा ढालने शुरु कर दिया।

मजबूरन MBT को चाँदी के सिक्के चलाए गए

(g) कराचिल अभियान →

हिमाचल के तराई क्षेत्र मे चलाया गया। तिब्बत की सर्दी व प्लेग ने सेना को मौत की नींद सुला दिया।

* MBT ने उश्र तथा जकात को छोड सभी क समाप्त कर दिये।
* अपने सिक्को पर "अल सुल्तान जिल्ली अल्लाह" की उपाधि लगाई।

फिरोजशाह तुगलक ÷ 1351–1388

गयासुद्दीन तुगलक —भाई→ रज्जब
↓ पुत्र | ↓ पुत्र
मुहम्मद बिन तुगलक | फिरोजशाह तुगलक

* राज्याभिषेक थट्टा मे 22 मार्च 1351 को

* सल्तनत काल का अकबर

- सिचाई पर कर लगाये < हक - ए - शर्ब / हब - ए - शर्ब > उपज का 1/10
- 24 कष्टदायी करो को समाप्त किया
- जजिया, जकात, खम्स, खराज कर ही रखे
- जजिया केवल ब्राह्मणो से लिया

कार्य →
1. दीवाने बंदगान - दास विभाग
2. दारुल शिफा - नि:शुल्क चिकित्सा
3. दीवाने खैरात - दान विभाग
4. दीवाने इस्तिहाल - पेंशन विभाग
5. PWD
6. मैरिज ब्यूरो
7. दीवाने खाना - कारखाना विभाग

Scanned with OKEN Scanner

FST ने जो क्षेत्र MBT के काल मे अलग हो गये उनको नही मिलाया।
MBT द्वारा समस्त ऋणो को माफ किया।
सुल्तान को प्रदत्त भेंट देने की प्रथा समाप्त की।

• जजिया कर क्या ?
↳ गैर धार्मिक कर है सबसे पहले यहूदियो तथा इसाईयो से वसूला गया था।
भारत मे इसकी शुरुआत 712 मे मो. बिन कासिम ने कि तथा यह हिन्दुओ से वसूला गया प्रारंभ मे लूले, लंगड़ो, अंधो के साथ ब्राह्मण भी जजिया कर से मुक्त थे।

FST ने ब्राह्मणो से यह कर लिया था।
अकबर ने जजिया कर को 1564 मे समाप्त।
औरंगजेब ने जजिया कर पुनः 1674 मे लागू किया
(मेवाड़ को जजिया से मुक्त रखा)
फरुखशियर ने 1713 मे हटाया तथा 1717 मे पुनः लागू कर दिया
मुहम्मद शाह ने 1719-1748 तक बंद रखा।

• जकात कर - यह मुस्लिमो से लिया जाता था
• खम्स कर - युद्ध मे लूट का माल
• खराज कर - भूमिकर

उपरोक्त (4) कर FST लेता था।
अन्य 24 गलत कर FST ने समाप्त कर दिया।

Page No.
Date:

⇒ उलेमा समर्थन हेतु हिन्दू मंदिरों को तुड़वाया तथा मरम्मत पर रोक लगा दी।
FST ने जगन्नाथ पुरी मंदिर को लूटा व मूर्ति समुद्र मे फेंक दी। बाध्य होकर जाजनगर के राजा ने अधीनता स्वीकार की

1361 मे नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर को नष्ट कर दिया।

⇒ उसने सरकारी पदो को वंशानुगत बनाया सैनिको को जागीर देने की प्रथा शुरु की यह प्रथम शासक था जिसने राज्य की आमदनी का ब्यौरा तैयार करवाया।

⇒ FST ने 300 नगरो का निर्माण करवाया कुछ महत्वपूर्ण निम्न है →
फतेहाबाद
फिरोजपुर
फिरोजाबाद / फिरोजशाह कोटला
जौनपुर → जौना खाँ की याद मे
हिसार

• अशोक के दिल्ली व टोपरा स्तम्भ लेखों दिल्ली से ले जाई गई नई राजधानी फिरोजाबाद ले गया था।

• कुतुबमीनार पर बिजली गिर जाने से चौथी मंजिल क्षतिग्रस्त हो गयी उसे पुनर्निर्माण करवाया तथा 5 वीं मंजिल बनवायी

Scanned with OKEN Scanner

नहरो का निर्माण →

रजबाह नहर ÷ सतलज से दीपालपुर

1. अनूपखनी नहर ÷ यमुना से सिरमूर
2. सिरमूर से हांसी
3. घग्घर से फिरोजाबाद
4. यमुना से फिरोजाबाद
5.

सिंचाई कर → हब - ए - शर्ब (उपज का 1/10) लागू

सिक्के → (1) अधा - जीतल का 50%
(2) बिख - जीतल का 25%

⇒ हिन्दू ग्रंथो को संस्कृत से फारसी मे अनुवाद करवाया जैसे संगीत, गणित, आयुर्वेद पर आधारि तथा ज्वालामुखी मंदिर से प्राप्त कुछ ग्रंथो का भ

- दलायले - फिरोजशाही → नक्षत्र व दर्शन आधारि
- फतूहात - ए - फिरोजशाही → फिरोजशाह की जीवनी
  - ↳ FST ने खुद लिखी
- तारीख - ए - फिरोजशाही, फतवा - ए - जहांदारी > बरनी द्वारा
  - ↳ FST का दरबारी
- गुन्यातुल मुगनिया → संगीत की प्रसिद्ध पुस्तक

⇒ FST को महान धर्मांध, औरंगजेब व सिकंदर लोदी का अग्रज, मध्यकाल का कल्याणकारी निरंकुश शासक कहा जाता है।

एलफिंस्टन व हेनरी एलियट →
FST को सल्तनत काल का अकबर कहते है

मृत्यु → 1388 ई. मे

गयासुद्दीन तुगलक II → FST का पौत्र था
दुर्बल व अयोग्य
मुहम्मद खाँ गद्दी हथियाना चाहता था परंतु जफर खाँ के पुत्र अबुबक्र शाह ने गद्दी हथियाने हेतु गयासुद्दीन तुगलक शाह II की हत्या करवा दी।

अबु बक्रशाह → 1389-1390

मुहम्मद खाँ ने अपनी स्थिति को मजबूत करता हुआ अबुबक्र शाह को गद्दी से हटा दिया

मुहम्मद खाँ → 1390 - 1394
↳ उपाधि - नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह III
विद्रोह → • गुजरात - जफर खाँ ने दबाया
• ईटावा } खुद जाकर दबाया
• दोआब

मृत्यु - 1394 मे

हुमायूँ खाँ → मुहम्मदशाह का पुत्र
शासन - 1 माह 16 दिन
↳ उपाधि - अलाउद्दीन सिंकदर शाह I

महमूद शाह → 1394 - 1413

इसके समय तैमूर लंग ने 1398 मे आक्रमण किया परंतु यह बच गया।

गुजरात, मालवा, खानदेश स्वतंत्र हो गये।
जौनपुर मे ख्वाजा शाह ने शर्की वंश की स्थापना की।

Scanned with OKEN Scanner

** सैय्यद वंश **

खिज्र खाँ → 1414-1421

जब तैमूर ने आक्रमण किया (1398) तो खिज्र खाँ ने उसका साथ दिया तथा तैमूर ने भारत छोड़ने से पहले मुल्तान, दीपालपुर, लाहौर की सूबेदारी खिज्र खाँ को दे दी।

जब तुगलुक वंश का अंतिम चरण होता है तो खिज्र खाँ आकर गद्दी पर हक जमाता है।

खिज्र खाँ स्वयं को पैगम्बर मुहम्मद का वंशज कहता है। सल्तनत काल में एकमात्र शिया वंश था।

पिता - नासिरुलमुल्क (FST का अमीर)

तैमूर के पुत्र शाहरुख का प्रतिनिधि बताता था खुद को खिज्र खाँ। खिज्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि नहीं धारण की। उपाधि "रैयत-ए-आला" की धारण की।

मृत्यु → 20 May 1421

मुबारकशाह → 1421-1434

↳ सुल्तान की उपाधि धारण की
खुद के नाम का खुतबा पढ़वाया
सिक्के चलवाये

मुबारकबाद शहर की स्थापना की।
"तारीख - ए- मुबारकशाही" → मुबारकशाह के का वर्णित
↓ writter
सरहिन्दी

मुबारकशाह के विरुद्ध संगठन →
↳ वजीर - सरवर अल मुल्क
↓
हिन्दू + मुस्लिम अमीरो के साथ मिलकर संगठन बनाया तथा सिद्धपाल नाम व्यक्ति ने मुबारकशाह द्वारा मुबारकबाद के निर्माण करते समय मार दिया [20 फरवरी 1434]

मुहम्मदशाह → 1434-1445
→ पिता - फरीद खाँ
↳ मुबारकशाह का दत्तक पुत्र था

→ वजीर → सरवर मुल्क - खान ए जहां उपाधि
→ मीरानसद्र - मुईनुल मुल्क उपाधि
→ बहलोल लोदी - खान - ए खाना उपाधि

वफादार → कमाल उल मुल्क के साथ मुहम्मदशाह मिल गया तथा वजीर सरवरमुल्क व साथियों को मरवा दिया।

मुहम्मद शाह को कमजोर समझकर कई राजाओ ने विद्रोह कर दिया। इब्राहीम शर्की ने सल्तनत के पुर्वी भागो पर आक्रमण किया।

मालवा के महमूद ने भी आक्रमण किया परंतु मुहम्मदशाह ने बहलोल लोदी को उसे रवाने भेजा तो पहले ही भाग गया।

बहलोल लोदी - लाहौर व सिंध का सुबेदार था

मृत्यु - [redacted] 1445 मे

अलाउद्दीन आदिलशाह → 1445 - 1451

→ वजीर - हमीद खॉ
→ वजीर से विवाद हो जाने पर वह बदायु चला गया। तथा दिल्ली का शासन अपनी पत्नी के 2 भाईयो - शहना ए शहर व अमीर कोहथे मे बॉट दिया। इन दोनो मे विवाद हो गया तो शहना - ए - शहर को अमीर कोहथे ने मार दिया तथा अमीर कोहथे को जनता ने मार दिया।

बहलोल लोदी ने सता अपने कब्जे मे ले ली व हमीद खॉ को मरवा दिया।

Scanned with OKEN Scanner

** लोदी वंश **

बहलोल लोदी → 1451 - 1489
सिकंदर लोदी → 1489 - 1517
इब्राहीम लोदी →

बहलोल लोदी → 1451 - 1489
→ पिता - मलिक काला ← BL के जन्म से पहले मृत्यु
दादा - मलिक बहराम
चाचा - मलिक सुल्तानशाह ← BL की देखरेख

यह अफगानो की शाहूखेल शाखा से था
उपाधि → गाजी

तारीख - ए - दाऊदी → अब्दुल्ला
↓
बहलोल लोदी के बारे मे कहा गया है कि "जब वह अपने सरदारो से मिलता था तो उस समय वह सिंहासन पर नहीं बैठता था।"

बहलोल लोदी व शर्की सुल्तान महमूदशाह →

इसकी पत्नी अलाउद्दीन आलमशाह की पुत्री थी (बीबी राजी)

अपने पति से बहलोल को दिल्ली से अपदस्थ करने के मांग की। महमूद शाह ने बडी सेना के साथ हमला कर दिया बहलोल पर परंतु महमूदशाह का एक अफगानी सेनापति दरिया खाँ, बहलोल से जा मिला।

Scanned with OKEN Scanner

महमूदशाह की हार हो गयी तथा जौनपुर दिल्ली मे चला गया।
इसके बाद बहलोल लोदी ने छोटे-2 प्रांतो को साम्राज्य मे मिलाना शुरू किया।

ग्वालियर अभियान :- इस अभियान से लौटते समय लू लगने के कारण 12 जून 1489 को बहलोल की मृत्यु मिलावली मे हो गयी।

- दिल्ली सल्तनत मे सर्वाधिक 38 वर्ष तक शासन
- यह हिन्दुओ के प्रति कट्टर नही था। बलकि इसके राय कर्ण सिंह, राय दादू, राय नरसिंह जैसे हिन्दु सरदार थे।

सिकंदर लोदी → 1489 - 1517

→ मूल नाम - निजाम खॉ
माता - जैबंद
पिता - बहलोल लोदी

- लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ सुल्तान था।
- बिहार को जीतकर दिल्ली सल्तनत मे शामिल
- 1504 मे आगरा की स्थापना की ताकि व्यापारिक मार्गो को सुरक्षित रख सके तथा राजस्थान के शासको पर नियंत्रण रख सके।

Scanned with OKEN Scanner

- 1506 मे आगरा को राजधानी बनाया आगरा मे बादलगढ़ का किला बनवाया।
- राज्य का हिसाब किताब रखने के लिए लेखा परीक्षण प्रणाली लागू की।
- खाद्यान्न / अनाज कर समाप्त कर दिया।
- व्यापारिक प्रतिबंधो को हटाया।
- भू-खजाने का हिस्सा भी नहीं लिया।
- गज - ए - सिकंदरी (30 इंच) पैमाना चलाया।

- मुहर्रम व ताजिया निकालना बंद करवा दिया
- मुस्लिम स्त्रियो के पीरो व संतो की मजार पर जाने पर रोक लगा दी।
- मस्जिदो को सरकारी संस्था बना दिया तथा वहा पर शिक्षा के केन्द्र खोले।
- हिन्दुओ पर जजिया कर पुनः लगा दिया।
- एक ब्राह्मण को फांसी दी क्योंकि ब्राह्मण ने कहा कि "H-M धर्म समान रूप से पवित्र है।"

- सिकंदर लोदी "गुलरुखी" नाम से फारसी भाषा मे कविताए लिखता था।
- सिकंदर लोदी मे "फरहंगे सिकंदरी" फारसी ग्रंथ लिखा जो आयुर्वेद पर आधारित था।
- इसके समय "लज्जत - ए - सिकंदरी" ग्रंथ रचा गया
- गुप्तचर विभाग इतना सुर्वश्रेष्ठ था कि लोग कहते थे राजा को सुचनाए भूत - प्रेत देते है।

- मृत्यु - 21 नव. 1517

Page No.
Date:

इब्राहीम लोदी → 1517 - 1526

↳ सिकंदर लोदी का पुत्र
अफगानो व अमीरो मे गृहयुद्ध से बचने के लिए
दिल्ली - इब्राहीम लोदी
जौनपुर - जलाल खाँ
> बाँट दिया

IL के समय अफगान राज्य का विघटन शुरू
कारण - इब्राहीम लोदी ने सरदारो के प्रति दमन की नीति अपनाई।
- जलाल खाँ की भी हत्या करवा दी
- विक्रमजीत सिंह (ग्वालियर) को हराकर उस क्षेत्र भी शामिल कर लिया।
- सांगा से भी वैमनस्य बढ़ा लिया था। खातौली का युद्ध

इन सब नीतियो से दौलत खाँ और आलम खाँ (IL का चाचा), दीलावर खाँ ने नाराज होकर बाबर को भारत मे आमंत्रित किया

<u>पानीपत का प्रथम युद्ध</u> → 21 अप्रैल 1526

इब्राहीम लोदी v/s बाबर → विजयी रहा

Reason
- कुशल नेतृत्वकर्ता
- तुलुगमा पद्धति + रूमी पद्धति का प्रयोग
- तोपची → उस्ताद अली व मुस्तफा

इस युद्ध मे लोदी मारा गया।

Page No.
Date:

दिल्ली सल्तनत व समाज

(A) **प्रशासनिक स्थिति** →

मुस्लिम राज्य सैद्धांतिक रूप से धर्मप्रधान होता है। इसमे यह शरीयत को प्रधान मानते थे तथा खलीफा को भी उसके अधीन मानते थे।

सुल्तानो ने खलीफा का नाइब पुकारा स्वयं को कुछ अलग थे - 1) अलाउद्दीन खिलजी → अस्वीकृति
2) मुबारक खिलजी
↓
स्वयं को खलीफा घोषित कि

दिल्ली के सुल्तानो ने खलीफा को माना परंतु व्यवहार स्वतंत्र करते थे। इसका कारन यह था कि एक तो वह खलीफा से दूर थे तथा वह भारत की सुन्नी प्रजा से, उलेमा वर्ग से समर्थन, विश्वास एवं वफादारी प्राप्त करना चाहते थे।

- सबसे पहले सुल्तान की उपाधि → गजनवी ने धारण
  बगदाद के खलीफा ने दी
- सुल्तान की उपाधि नहीं धारण की → खिज्र खां
  रैयत-ए-आला

→ मुस्लिमो मे उत्तराधिकार का कोई नियम नहीं था
- इल्तुतमिश ने वंशानुगत शासन सिद्धांत लागू किया था। रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

Scanned with OKEN Scanner

MIRAJ
Page No.
Date:

[redacted] बलबन ने कहा कि - "राजा देवत्व का अंश होता है उसकी समानता कोई मनुष्य नहीं कर सकता है।"

अलाउद्दीन खिलजी ने सुल्तान की गरिमा को सदैव सर्वोपरि रखा। अ.ख ने सिकन्दर-ए-सानी की उपाधि धारण की।

सल्तनकाल मे प्रशासनिक संरचना → फारसी-अरब
सैन्य संगठन → तुर्क-मंगोल
भूराजस्व पद्धति → हिन्दुओ की

केन्द्रीय प्रशासन

सुल्तान
- → राज्य का सर्वोच्च संचालक
- → न्यायाधिकरण का सबसे बड़ा निर्णायक
- → कानूनो का निर्माता
- → सेना का सर्वोच्च सेनापति

सुल्तान, राज्य के सभी महत्वपूर्ण मामलो मे चर्चा हेतु 2 प्रकार के केन्द्र थे →
- मजलिस-ए-खलवत
- मजलिस-ए-आर्य

} विश्वासपात्र तथा उच्च पदाधिकारी भाग ले सकते थे

सुल्तान प्रशासन पर नियंत्रण मंत्रियो के माध्यम से करता था तथा। मंत्री विभाग के प्रभारी होते थे।

Scanned with OKEN Scanner

मंत्री सुल्तान की निर्देशित नीति का पालन करते थे।

नाइब-ए-मामलिकात →

यह पद बहराम शाह के समय शुरू किया गया था यह राजा के बाद परंतु वजीर से ऊपर होता था। इस पद के द्वारा शासन शक्ति सरदारो के हाथ मे आ गयी।

विभाग ① दीवान-ए-विजारत → राजस्व विभाग
↓
प्रधान - वजीर / प्रधानमंत्री
↓
देखभाल — यह वित मंत्री भी होता था
- लगान
- कर व्यवस्था
- सैन्य व्यय

→ सहायता हेतु अधिकारी होते थे -
- मुश्रिफ-ए-मुमालिक → महालेखाकार
- मुस्तौफी-ए-मुमालिक → महालेखा परीक्षक
- खजिन → कोषाध्यक्ष
- मजूमदार → शेष राशि का हिसाब

② दीवान-ए-अर्ज → सैन्य विभाग
↳ प्रधान → आरिज-ए-मुमालिक (रक्षामंत्री)

कार्य → • सैनिको की भर्ती
• वेतन का निर्धारण व वेतन
• सैनिको का हुलिया

③ दीवान ए इंशा → शाही पत्राचार विभाग

प्रधान → दबीर-ए-खास
कार्य → • सुल्तान के फरमान जारी करना
• सुल्तान के आदेशो को राज्य के विभिन्न भागो मे भेजना।
• शाही घोषणाओ को तैयार करना।

④ दीवान ए रसालत → विदेश विभाग

कार्य → • विदेश वार्ता तथा कूटनीतिक संबंध
• विदेशी पत्र व्यवहार
• राजदूतो का आदान-प्रदान

अन्य विभाग

⑤ न्याय विभाग → प्रधान - काजी उल कुजात

⑥ सद्र उस सुदूर → धर्म विभाग
⑦ वकील ए दर → शाही महल + सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओ का प्रबंधक
⑧ दीवान ए कोही → कृषि विभाग (MBT द्वारा)
⑨ दीवान ए इमारत → लोक निर्माण (FST द्वारा)
⑩ बरीद ए मुमालिक → गुप्तचर
⑪ दीवान ए रियासत → बाजार नियंत्रक (A.K द्वारा)
⑫ दीवान ए बंदगान → दास विभाग (FST द्वारा)
⑬ दीवान ए कारखाना → कारखाना विभाग (FST द्वारा)

Scanned with OKEN Scanner

Page No.
Date:

प्रांतीय प्रशासन

- प्रांत को विलायत कहा जाता था।
- प्रांत का गर्वनर - मुक्ती / इक्तादार / वली / नाजिम
- बलबन ने प्रांतो की आय व्यय का पता लगाने हेतु "ख्वाजा" नामक अधिकारी की नियुक्ति करता

शिक प्रशासन

- जिलो को शिक कहा जाता था।
- जिलो के शासक शिकदार कहलाते थे।
- सर्वप्रथम बलबन के काल मे अस्तित्व मे आये।

परगना एवं गॉव प्रशासन

- आमिल → प्रशासनिक अधिकारी
- मुंसिफ → राजस्व अधिकारी
- गॉव → मुकद्दम (मुखिया)

100 गॉवो का समूह का शासक → अमीर-ए सदा पद MBT ने बनाया

(B) सैन्य संगठन → तुर्की + मंगोल

- बलबन ने "दीवान-ए-अर्ज" विभाग बनवाया
- AK ने स्थाई सेना रखना शुरू किया
- इल्तुतमिश ने "हश्म-ए-कल्ब" विभाग बनाया

- AK का सैनिक वर्गीकरण → आमीरान ए हजार
  आमीरान ए तुमन

- बरनी का उल्लेख →
  10 घुडसवार टुकडी ↓ सरखेल
  10 सरखेल ↓ सिप्पेसालार
  10 सिप्पेसालार ↓ अमीर
  10 अमीर ↓ मलिक
  10 मलिक ↓ खान
  सरखेल — सबसे छोटी
  खान — सबसे बडी

- AK ने घोडे दागने व हुलिया प्रथा प्रारंभ की
  ↳ इक्ता प्रथा समाप्त की तथा नकद वेतन शुरू किया

- FST ने आनुवांशिक आधार पर सैनिक नियुक्त किया। दासो को सेना मे भर्ती किया

- सेना मे तोपे नहीं थी, पत्थर फेकने वाली मशीने थी।

- सेना के भाग → घुडसवार
  → गजसेना
  → पैदल सेना

सैनिको के प्रकार →

खास खेल → शाही अंगरक्षक

1. प्रांतीय इक्तादारो तथा अमीरो द्वारा भर्ती
2. युद्ध के अवसर पर भर्ती
3. स्वयं सेवक मुसलमान
4.

न्याय एवं दंड व्यवस्था -

सबसे बड़ा जज → सुल्तान

धार्मिक मामले	अन्य मुकदमे	गाँव मुकदमे
मुख्य सदर / मुफ्ति	काजी	ग्राम पंचायत

(मुख्य सदर / मुफ्ति, काजी) → वंशानुगत पद थे

मुस्लिम कानून के स्रोत :

कुरान	हदीस	इजमा	कयास
मुख्य स्रोत	पैगम्बर के कथन एवं कार्य	मुजतहिद द्वारा व्याख्या किया गया / अल्लाह की इच्छा का कानून ही रूप	तर्क व विश्लेषण पर कानून

सामान्य कानून → मुसलमानो पर लागू

फौजदारी कानून → H - M दोनो पर

सुल्तान हिन्दुओ के मामले मे न्यूनतम हस्तक्षेप करता था।

Scanned with OKEN Scanner

(D) **राजस्व व्यवस्था** :-

मुद्रा के मानकीकरण का श्रेय - इल्तुतमिश

टंका — चांदी का
जीतल — तांबे का

↳ पहले गौरी के सिक्के चलते थे जिन पर एक तरफ गौरी का नाम दूसरी तरफ लक्ष्मी की आकृति बनी हुई थी।

↳ MBT के सोने का सिक्का - दीनार
MBT का सोने - चांदी की जगह चलाया गया सिक्का - अदली (140 ग्रेन चांदी का बराबर)

↳ FST के सिक्के → अद्धा - 1/2, बिस - 1/4 > तांबा + चांदी मिश्रण
तांबे का सिक्का → दिरहम
FST का तांबे का सिक्का → दांग
FST का चांदी का सिक्का → शंशगनी

* सुल्तानो का वित्तिय सिद्धांत → हनफी विचारधारा पर
* सुल्तानो का इस्लामी अर्थव्यवस्था → किताब उल खराज
↓ writer
बगदाद का काजी ← अबू याकूब

* सल्तनतकाल के महत्वपूर्ण कर →

(1) उश्र : 5 से 10% मुस्लिमो से लिया जाने वाला भूमिकर।

Scanned with OKEN Scanner

(2) खराज → 1/3 - 1/2 गैर मुस्लिमो से

(3) खुम्स → भूमि के खजाने [redacted] का धन
1/5 - राज्य को
4/5 - सैनिको मिलता था

(4) जकात → 2 - 2.5% मुसलमानो पर धार्मिक कर

(5) जजिया → गैर मुस्लिमो से
12, 24, 48 दिरहम
FST ने ब्राह्मणो से वसूला

- MBT + A.K ने भूमि की पैमाइश करवा कर कर लगाये थे।
- FST ने "हक - ए - शर्ब" - सिंचाई कर लिया
  └ उपज का 10%
- A.K ने मकान पर तथा दुधारु पशुओ पर कर लिया
- A.K ने हिन्दू से 5% व मुस्लिम से 2.5% व्यापारिक कर लिया।

* सल्तनत काल मे भूमिया →
(1) खालसा - सुल्तान की भूमि थी
(2) लगान मुक्त भूमि जो दान मे दी गई हो
(3) इक्ता भूमि
(4) अधीनस्थ हिन्दू राजा की भूमि

→ नगद वेतन के बदले सैनिक + असैनिक + अमीरो को दी गई।

* इक्ता प्रथा को इल्तुतमिश ने शुरु किया था ताकि दूर दराज के क्षेत्र केन्द्र से जुड़े।

* बलबन ने "ख्वाजा" नामक अधिकारी को राजस्व संबंधी कार्यों पर नजर रखने हेतु नियुक्त किया।

* बलबन ने जीवन भर तथा उत्तराधिकारी को देने पर प्रतिबंध लगा दिया।

* FST ने इक्तादारो को वंशानुगत अधिकार दिया FST ने सर्वाधिक इक्ताए बांटी थी।

* सल्तनत काल की अनुदान भूमिया → (3)
  1. मिल्क - सजाओ द्वारा प्राप्त
  2. वक्फ - धर्म की सेवा के लिए
  3. इनाम - पेंशन के रूप मे

* AK ने उपरोक्त भूमियो का राज्य मे शामिल की। ग्यासुद्दीन तुगलक ने भूमिया लौटा दी थी।

Page No.
Date:

(E) आर्थिक स्थिति →

भू राजस्व निर्धारण की प्रचलित पद्धतियां →

(1) बटाई
→ खेत बटाई – फसल कटने से पहले
→ लाभ बटाई – फसल कटने पर
→ रास बटाई – अनुमान पर बंटवारा

अन्य नाम – किस्मत व गल्ला
गल्ला बक्शी

(2) मसाहत – भूमि की पैमाइश का आधार पर
बिस्वा के आधार पर
A.K ने पैमाइश आधार पर कर लिया

(3) मुक्ताई – बांट प्रणाली पर आधारित था।

AK ने भूमिकर 50% रखा था। भूमि के वास्तविक माप पर जोर दिया। बकाया राजस्व की वसूली के लिए "विजारत" शाखा प्रारंभ की तथा वही मुस्तखराज इसका प्रमुख था।

FST ने पैमाइश को छोड़कर बटाई प्रथा को पुनः शुरू किया। नहरे भी खुदवाई।

MBT ने "दीवान-ए-कोही" कृषि विभाग बनाया
work ↓
मालगुजारी व्यवस्था ठीक प्रकार से चलाना
खेती अयोग्य भूमि को योग्य बनाना

MBT ने सोनधर / तकावी (ऋण) दिया।
FST ने ऋणो को समाप्त किया तथा (24) प्रकार से करो को समाप्त किया।
FST ने सिंचाई कर लगाया।

सिकंदर लोदी ने "गज-ए-सिंकदरी" भूमि की पैमाइश का माप जारि किया।

(F) तकनीकी विकास →

- 4 पहिये वाले रथ + इक्का गाड़ी चलते थे
- नौका निर्माण का उद्योग - देवल (गुजरात) मे
  ↓ अंतराष्ट्रीय बंदरगाह
- खंभात का रेशम प्रसिद्ध था। इस पर A.K ने निर्यात करने की पाबंदी लगाई थी।
- देवगिरी के व्यापारी रत्नो मे माहिर थे।
- बंगाल चावल व रेशम हेतु प्रसिद्ध था।
- बनारस विशेष प्रकार की पगड़ियो हेतु प्रसिद्ध था।

मार्कोपोलो "लाहौर से इस्पात के निर्यात की बात कहता है तथा सूती वस्त्र के निर्यात की बात कहता है।"

- भारत मे नील का निर्यात किया जाता था लाहौर व बयाना नील हेतु प्रसिद्ध थे।

- भारत मे घोड़ो व हथियारो का आयात होता था घोड़ो का तुर्किमेस्तान व ईरान से आयात

ईरान से अंगूर का भी आयात होता था।
अदन व मिस्त्र मे दासो का व्यापार होता था।
रेशम के कीड़े पालने की प्रथा भी थी।

बाबरनामा → रहट का प्रयोग का उल्लेख
फूतूह उस सलातीन → चरखे का प्रयोग का उल्लेख
↳ writter इसामी

अमीर खुसरो → कागज का प्रयोग, बहुतायत में
↓
बंगाल + गुजरात मे कारखाने

समय सूचक यंत्र बनाया - FST काल
रकाब व नाल का घोड़ो के पैरो मे प्रयोग किया जाता है।
धातु उद्योग → लौह उद्योग (बंगाल, दिल्ली, अहमदा

इब्नबतूता → दिल्ली की सबसे बड़ी मंडी
↳ दौलताबाद - मोतियो का सर्वाधिक व्यापार

Page No.
Date:

⑥ स्थापत्य कला →

भारतीय - इस्लामी कला का मिश्रण।
मेहराब व गुबंद का प्रयोग हुआ।
इस्लाम मे जीवित वस्तुओ का अंकन वर्जित था

- कुतुबुद्दीन → • कुवतुल इस्लाम मस्जिद (1197)
  ↓
  पहली तुर्क मस्जिद, दिल्ली मे स्थित रायपिथौरा किले के अवशेषो पर जहा पर पहले जैन व विष्णु मंदिर था।

- अढाई दिन का झोपड़ा (1200) - अजमेर
  ↓
  संस्कृत महाविद्यालय के स्थान पर।

- कुतुबमीनार (1197) - दिल्ली
  ↓
  पूर्ण बनवाया - इल्तुतमिश ने

- इल्तुतमिश → • कुतुबमीनार को पूरा करवाया
  → मकबरा शैली का जन्मदाता
  ↓
  - सुल्तान गढ़ी का मकबरा बनवाया

- बदायू मे जामा मस्जिद बनवायी
- नागौर मे तारकीन का दरवाजा बनवाया

Page No.
Date:

बलबन → स्वयं का मकबरा बनवाया
↓
पहला शुद्ध इस्लामी पद्धति से निर्मित मक़
लाल महल बनवाया

अलाउद्दीन खिलजी →
- सीरी महल
- हजार खंभा महल - पूर्णत इस्लामी
- अलाई दरवाजा - पहली बार वैज्ञानिक विधि
- कुवतुल इस्लाम मस्जिद का विस्तार
- निजामुद्दीन औलिया की दरगाह में जमात मस्जिद

मुहम्मद बिन तुगलक →
- जहांपनाह नगर - दिल्ली
- तुगलकाबाद में आदिलाबाद का किला

फिरोजशाह तुगलक →
- फिरोजाबाद + फिरोजशाह कोटला
- काली मस्जिद
- खिर्की मस्जिद
- काला मस्जिद
- खाने जहा तेलगांनी मकबरा → प्रथम अष्टभुजाकार मकबरा

↓

लोदी काल → मकबरो का काल

सिकंदर लोदी →
2 गुंबद वाले इमारत
मकबरे चबूतरे पर बने थे।

(H) **संगीत कला** →

इस्लाम मे संगीत कला वर्जित है। परंतु सल्तनत काल मे सुल्तानो ने संगीत कला को आश्रय दिया। सुफी संतो ने भी संगीत कला को बढ़ाया।

तुर्कों की संगीत कला → ईरान + मध्य एशियाई वाद्ययंत्र भारत मे आये → रबाब व सारंगी

मध्यकाल मे संगीत का आदि संस्थापक - अमीर खुसरो

भारत + ईरानी मिश्रण
↓
राग शैली बनाई → इमान राग, साजगीरी शैली

कव्वाली गायन शुरु

→ A.K ने अमीर खुसरो को नायक की उपाधि दी
AK ने दक्षिण भारत से महान संगीतज्ञ गोपाल को दरबार मे बुलाया।

→ गयासुद्दीन तुगलक ने संगीत पर प्रतिबंध लगाया

→ फिरोज s तुगलक भी संगीत प्रेमी था इसके काल मे 'रागदर्पण' का फारसी मे अनुवाद किया गया

→ जौनपुर के शर्की सुल्तान संगीत प्रेमी थे।
हुसैनशाह शर्की ने भारतीय संगीत मे ख्याल गायन को सम्मिलित किया

Scanned with OKEN Scanner

→ हुसैनशाह के समय "संगीत शिरोमणी" ग्रंथ की रचना की गई। शर्की शासको के समय भारतीय संगीत का प्रथम ग्रंथ "गुनपाल उल मुनयास" रचा

→ भारत का सीदी → हसन देहलवी
उच्च कोटी की गजलो के कारण

→ ग्वालियर के राजा मानसिंह के संरक्षण मे "मान कौतूहल" संगीत ग्रंथ की रचना हुई। ध्रुपद गायन का भी सृजन इन्ही के काल मे हुआ

→ बंगाल मे चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन शैली को जन्म

→ सारंगदेव - संगीत रत्नाकर की रचना
→ लोकनकवि - रागतरंगिनी की रचना
→ चिन्तामणि की उपाधि बिहारी बुलबुल

Page No.
Date:

① चित्रकला →

संगीत की तरह मुस्लिमो मे अन्य जीवित प्राणी के चित्र बनाना वर्जित था। अतः प्रारम्भिक तुर्की शासको ने चित्रकला मे रुचि नही ली

→ अब्दुल्ला चगताई का विचार यह है कि दिल्ली सल्तनत मे चित्रकला का अस्तित्व था।

→ हर्मन गोड्स - 1947 मे प्रकाशित लेख "जर्नल आफ द इंडियन सोसायटी आफ ओरियंटल आर्ट" मे भारतीय कला शैलियो का उल्लेख किया है तथा उसमे सल्तनकाल की चित्रकला का अस्तित्व सामने लाया है।

→ बैहकी - गजनवी का इतिहासकार
इसने भी सल्तनकालीन चित्रकला को बताया

→ इसामी — Book फुतुह - उस - सलातीन
↳ इल्तुतमिश के समय चीनी चित्रकार दिल्ली आये थे

→ सल्तनकाल की इमारतो की दीवारो पर चित्र

Scanned with OKEN Scanner

Page No.
Date:

(J) भाषा और साहित्य →

प्रचलित भाषाएँ – फारसी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू
इन भाषाओं में ग्रंथ भी थे
प्रांतीय भाषाओं का भी प्रचलन था

संस्कृत – उच्च वर्ग की भाषा
प्रांतीय भाषा – भक्ति मार्ग के संतो द्वारा प्रयोग

मुस्लिम साहित्य की भाषा → अरबी
तुर्की सुल्तानों की भाषा → फारसी (राजभाषा)
↓
केन्द्र लाहौर की

- इल्तुतमिश → (a) नरूद्दीन मुहम्मद – लुबाब-अल-अलबाब
- बलबन → (a) अमीर खुसरो (b) मीर हसन देहलवी

फारसी कवियो में सर्वश्रेष्ठ
अपनी कविताओ में हिन्दी शब्दो का प्रयोग

- मुहम्मद बिन तुगलक →
(a) बदरूद्दीन मुहम्मद – फारसी का श्रेष्ठ

- फिरोजशाह तुगलक → स्वयं आत्मकथा लिखी
(a) अफीक
(b) बरनी

• सिकंदर लोदी → गुलरुख उपनाम से कविता
(a) शेख अब्दुल्ला
(b) शेख जमालुद्दीन
(c) रफीउद्दीन शिराजी

लोदी काल < आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी - फरहंगे सिकंदरी
गान विद्या पर आधारित - लज्जत ए सिकंदरी

* जिया नक्शवी का ग्रंथ - तुतीनामा
↓
संस्कृत कथाओ फारसी मे अनुवाद किया गया

* "हिन्दी" शब्द का पहला प्रयोग - जफरनामा
(1424 - 1425) ↓ By
शर्फुद्दीन मजदी

* हिन्दी का प्रथम महाकाव्य - पृथ्वीराज रासो
↓ By
चंदरबरदाई

* जगनिक - आल्हाखंड
* सारंगधर - हम्मीर काव्य

* उर्दू मूलतः तुर्की भाषा का शब्द है।
इसका अर्थ - शाही शिविर / खेमा होता है।

मध्यकाल मे उर्दू को हिन्दवी कहा जाता था
द. भारत मे उर्दू का मिश्रित भाषा मे प्रयोग
किया जाता था जिसे दक्कनी कहा जाता था

Scanned with OKEN Scanner